लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 16

भोजप्रबन्ध :

एक काव्यशास्त्रीय अध्ययन

सुधीर कुमार लाल

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला – 16

भोजप्रबन्ध :

एक काव्यशास्त्रीय अध्ययन

प्रधान सम्पादक
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी

डॉ. सुधीर कुमार लाल

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

पुरोवाक्

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विजिज्ञासस्व। तद्ब्रह्मेति। इति श्रुतौ आनन्दमीमांसा श्रूयते। सम्पूर्णजीवनम् आनन्दान्वेषणेनैव व्यतीयते। एष आनन्दो लोकिकालौकिकभेदेन द्विधा विज्ञायते। लौकिकसुखसमृद्धिराद्यः आत्मस्वरूपज्ञानं द्वितीयः। एतद्द्वयमतिरिच्य कश्चिदानन्दो वर्तते तृतीयः काव्यानन्द इति। एष आनन्दः काव्यानां श्रवणमननादिभिः सहृदयैः प्राप्यमाणोऽनिर्वचनीयः। अत एव कविकर्म काव्यं श्रेष्ठं मन्यते। क्रान्तदर्शी कविः स्वीयेच्छया अभिनवलोकस्य कल्पनाख्यस्य सृष्टिं करोति। अत एव कविः प्रजापतितुल्यो मन्यते। तदुक्तं–

अपारे काव्यसंसारे कविरेव प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेवेदं परिवर्तते॥ इति।

तादृशं काव्यं त्रेधा ज्ञायते – गद्यं, पद्यं, चम्पूरिति। गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते इति लक्षणलक्षितमिदं काव्यं भवति। तादृशे चम्पूकाव्ये गद्यपद्योभयरसास्वादो जायत इति स प्रकारोऽधिकतरं विशिष्यते।

तादृशकाव्यप्रकारमवलम्ब्य श्रीबल्लाकविना सन्दृब्धः प्रबन्धो भोजप्रबन्धनाम्ना प्रथते। भारतवर्षस्य कश्चनापकर्षकालो मन्यते षोडशं शतकं विविधकारणैः। तस्मिन्काले जीवितेन कविना बल्लालेन एषः प्रबन्धः प्रणीतः। इदं काव्यं कथाप्रसङ्गात्मकम्, उपदेशात्मकम्, सङ्कलनात्मकञ्च शोभते।

शताधिकप्रबन्धनिमार्तुः विविधशास्त्रपाथोधिमन्थनप्राप्तपीयूषवितरणविचक्षणस्य विलक्षणबुद्धिवैभवशालिनो धाराधराधीशस्य महाराजभोजस्य अनुश्रुतिभिः प्राप्तैः कथाप्रसङ्गैश्चरितमत्र विषयीकृतम्। तत्प्रसङ्गाच्च

विषय-सूची

पुरोवाक्		iii-iv
भूमिका		v-viii
1.	श्रीबल्लाल कवि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	1
2.	भोजप्रबन्ध : एक रचनात्मक विमर्श	12
3.	भोजप्रबन्ध : शिल्प-विवेचन	52
परिशिष्ट-1		103
	भोजप्रबन्ध : मूल पाठ	105
परिशिष्ट-2		195
	श्लोक-सूची	197
परिशिष्ट-3		205
	संदर्भ-ग्रन्थ-सूची	207

यहां प्रत्येक पद मुक्त अथवा अन्य पद-निरपेक्ष रहने के कारण सुन्दर लग रहा है।

वृत्तगन्धि- **वृत्तभागयुतं परम्।**[1]

अर्थात् वृत्त या छन्द से युक्त जो गद्य भेद होता है, वह वृत्तगन्धि कहलाता है। इसके भी कतिपय उदाहरण भोजप्रबन्ध के अवलोकन से दृग्गोचर होते हैं।

उत्कलिकाप्राय-**ततः प्रतोलीषु राजभवनप्राकारवेदिकासु बहिर्द्वारविटङ्केषु पुरसमीपेषुभेरीपटहमुरजमड्डकडिण्डिमनिनादाडम्बरेणाम्बरं विडम्बितमभूत्। इत्यादि।**[2]

यहाँ लम्बे-लम्बे समस्त पद स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

चूर्णक-**'ततो निशानाथहीनेव निशा, दिनकरहीनेव दिनश्रीः, वियोगिनीव योषित्, शक्ररहितेव सुधर्मा, न भाति भोजभूपाल सभा रहिता कालिदासेन।' इत्यादि।**[3]

यहाँ स्वल्प समास वाले पदों की योजना का सौन्दर्य स्पष्ट झलक रहा है।

यदि संस्कृत-साहित्य की गद्य-शैली का अवलोकन किया जाए, तो साहित्यिक काव्यों में स्पष्टरूपेण दो शैलियाँ प्राप्त होती हैं-एक अलंकृत शैली तथा दूसरी नैसर्गिक शैली।[4]

अलंकृत गद्य शैली का उदय यद्यपि सुबन्धु[5] (षष्ठ शती का अन्त) से भी प्राचीन जान पड़ता है, पर उसका स्पष्ट रूप हमें सर्वप्रथम उनकी 'वासवदत्ता' में ही प्राप्त होता है। इसी अलंकृत गद्य-शैली के मार्ग पर बाणभट्ट, तथा अन्य गद्य एवं चम्पू कवि चलते रहे हैं। यहाँ तक कि आचार्य दण्डी भी जिनका झुकाव नैसर्गिक गद्य शैली की ओर है, इस अलंकृत गद्य शैली को सर्वथा न त्यागते हुए, उपर्युक्त दोनों

1. साहित्य दर्पण, षष्ठ परि०, पृ० 226
2. भो० प्र०, कथामुख, पृ० 110 (अग्रे द्रष्टव्य)
3. वही, पृ० 137
4. व्यास, भोलाशंकर : भो० प्र०, भूमिका, पृ० 5
5. उपा० बल०-सं० सा० का इतिहास, पृ० 384

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

मानित विश्वविद्यालय

नई दिल्ली